9

''क्या आप न्याय के दिन के लिए तैयार हैं?''

(2:1-16)

एक पुराना गीत जिसे बहुत से लोग जानते हैं, घोषणा करता है:

एक महान दिन आने वाला है, एक महान दिन आ रहा है,
एक महान दिन और निकट आता जा रहा है;
जब पवित्र लोगों को पापियों से अलग करके
दायें और बायें किया जाएगा,
क्या आप उस दिन के आने के लिए तैयार हैं ?
क्या आप तैयार हैं ? क्या आप तैयार हैं ?
क्या आप न्याय के दिन के लिए तैयार हैं ?[1]

''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27)। अथेने के दार्शनिकों को पौलुस ने बताया कि ''क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा'' (प्रेरितों 17:31)। उसने लिखा कि ''अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10क)। इतिहास लगातार उस चरम वाले दिन की ओर बढ़ता जा रहा है, जब न्याय किया जाएगा और सब गलतियां ठीक की जाएंगी। क्या आप उस दिन के लिए *तैयार* हैं ?

यह पाठ रोमियों 2 के पहले भाग पर केन्द्रित है। इस अध्याय में पौलुस ने अपना ध्यान यहूदियों को यह दिखाने के लिए लगाया कि अन्यजातियों की तरह वे भी अपने पाप में सोये हुए थे। पहली सौलह आयतों में उसकी टिप्पणियां आने वाले न्याय के विषय के इर्द-गिर्द घूमती हैं। अध्याय 1 में परमेश्वर के उस क्रोध के विषय में बताया था, जो अधर्मी लोगों के विरुद्ध प्रकट किया *जा रहा* था (1:18) परन्तु अध्याय 2 क्रोध के आने पर रो देता है (2:5)-''जिस दिन परमेश्वर ... यीशु मसीह के द्वारा मनुष्य की गुप्त बातों का न्याय करेगा'' (2:16)। अपने वचन पाठ का अध्ययन करते हुए हम परमेश्वर के न्याय के मूल नियमों को जानेंगे।

न्याय होना अवश्य है![2] (2:1-5)

परमेश्वर न्याय करने वालों का न्याय करेगा (आयतें 1-3)

पिछले पाठ में हमने यह ध्यान देते हुए कि यहूदी लोग अन्यजातियों पर दोष लगाते थे जबकि स्वयं वे वैसे ही पाप कर रहे थे, 1-3 आयतों का अध्ययन किया (देखें आयतें 21, 22)। इस कारण पौलुस ने कहा, ''सो हे दोष लगाने वाले, तू कोई क्यों न हो; तू निरुत्तर है! क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिए कि तू जो दोष लगाता है, आप ही वही काम करता है'' (आयत 1)। दूसरे के जीवन में पाप देखना बहुत आसान है और अपने जीवन में देखना उतना ही कठिन है![3]

फिर पौलुस ने कहा, ''और हम जानते हैं,[4] कि ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक-ठीक दण्ड की आज्ञा होती है।'' (आयत 2)। यूनानी धर्मशास्त्र में मूलत: ''परमेश्वर का न्याय [*krina*] सच्चाई [*aletheia*] के अनुसार [*kata*] है।''[5] डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने लिखा है कि हम निष्पक्ष मुकदमे की बात पर सुनिश्चित हो सकते हैं:

> परमेश्वर के न्याय का सच्चाई से सम्बन्ध होने का अर्थ पहले तो यह है कि परमेश्वर स्वयं सच्चा है और इसलिए पूरी तरह से बिना पूर्वाग्रह के होगा, और दूसरा यह कि प्रमाण सच्चा होगा, इसलिए अपविचार की विचार की बात ही नहीं हो सकती।
>
> ... [मनुष्यों की कचहरियों के विपरीत,] परमेश्वर की कचहरी में कोई गलतफहमी, कोई गलत बयानी, या न्याय की कोई नाकामी नहीं होगी, ... और न कोई गलती-सब कुछ सच्चाई के अनुसार होगा।[6]

पौलुस ने ज़ोर देकर कहा, ''और हे मनुष्य, तू जो ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा?'' (आयत 3)। अनुवादित शब्द ''मनुष्य'' (*anthropos*) का इस्तेमाल ''आम तौर पर 'मानवीय जीव' के लिए'' होता है।[7] कई लोगों का विचार है कि पौलुस नाशवान मनुष्य के न्याय की तुलना अविनाशी ईश्वरीय न्याय से कर रहा था। ऐसा है या नहीं, परन्तु प्रेरित द्वारा उठाया गया प्रश्न सत्य है कि परमेश्वर के न्याय से कोई नहीं बचेगा!

परमेश्वर अपश्चात्तापियों का न्याय करेगा (आयतें 4, 5)

आयत 4 में पौलुस ने अपना आरोप जारी रखा: ''क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?'' उसने यहूदियों को उनके प्रति परमेश्वर की ''कृपा'' (*chrestotes*) के ''धन'' (*cloutos*) का स्मरण कराया। यहूदियों के साथ अपनी वाचा के अपने योगदान को पूरा करते हुए परमेश्वर ने उन पर आत्मिक और भौतिक आशिषों की वर्षा की थी। उसके साथ ही वह वाचा के उनके भाग को पूरा करने में उनकी नाकामी के साथ सहनशील (*anoche*) और ''धीरजवंत'' (*makrothumia*) रहा था।

यहूदी लोगों को उनके पापों के लिए तुरन्त और तत्काल दण्ड देने के बजाय परमेश्वर ने उन्हें

इस उम्मीद से कि उसकी कृपा उन्हें ''मन फिराव'' (*metanoia*) के लिए ले जाएगी, समय और अवसर दिया था। अफ़सोस उन्होंने परमेश्वर की भलाई को इस चिह्न के रूप में ले लिया कि उसने उनके पापों को नज़रअंदाज कर दिया है क्योंकि वे उसकी वाचा के लोग थे। पश्चात्तापी होने के बजाय वे और अपश्चात्तापी होते गए।

उस फंदे में फंसना जिसमें यहूदी गिरे थे बहुत आसान है। कोई अपने आयकर पर हेराफेरी करता है ... या जाति भेद के चुटकले पर हंसता है ... या किसी दूसरे की पत्नी की हवस रखता है।[3] जो यह सब करता है और कुछ नहीं करता। परमेश्वर उसे उसी समय भूमि पर नहीं गिरा देता। उस पर कोई आसमान से बिजली नहीं गिरती। उसके लिए यह सोचना आसान है कि वह ''इसके साथ निकल आया,'' यानी उसके और परमेश्वर के बीच में अभी भी सब कुछ ठीक-ठाक था।

पौलुस वास्तव में हम सब को स्वीकृति के लिए परमेश्वर की सहनशीलता को गलत न लेने की चेतावनी दे रहा था। हम जीवित और सांस इसलिए ले रहे हैं क्योंकि परमेमश्वर हमें मन फिश्राने का अवसर दे रहा है (देखें 2 पतरस 3:9)। हमें चाहिए कि परमेश्वर की भलाई को तुच्छ न समझने में सावधान रहें (रोमियों 2:4; KJV)। बल्कि हमें मन फिराने के लिए उकसाने के लिए परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्तियों को काम करने दें!

जब यहूदी लोग परमेश्वर की कृपा का दुरुपयोग कर रहे थे तो इसका परिणाम क्या हुआ? पौलुस ने उन्हें बताया, ''अपनी कठोरता और हठीले मन [*sklerotes*[9]] के अनुसार उसके क्रोध [*orge*] के दिन के लिए, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय[10] प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध [*orge*] कमा रहा है'' (आयत 5)। इस पाठ का आरम्भ ''एक महान दिन आ रहा है'' गीत की पहली आयत के साथ हुआ। अन्तिम भाग में यह गम्भीर शब्द हैं:

एक दुखद दिन आ रहा है,
एक दुखद दिन आ रहा है,
एक दुखद दिन और निकट आता जा रहा है;
जब पापी को अपना अन्त सुनाई देगा,
दूर हो जाओ, मैं तुम्हें नहीं जानता,
क्या आप उस दिन के लिए तैयार हैं?

हम नहीं जानते कि वह दिन कब आएगा (मत्ती 24:36)। हम इतना जानते हैं कि वह दिन आ रहा है और आज यह बीत गए कल के दिन से निकट है!

कठोर और अपश्चात्तापी लोगों की प्रतीक्षा कौन कर रहा था? यह कहकर कि वे ''क्रोध के दिन के लिए'' ''क्रोध कमा'' रहे थे, पौलुस ने चौंकाने वाले अलंकार का इस्तेमाल किया। ''कमा रहा'' (*thesaurizo*) का सम्बन्ध आमतौर पर खज़ाने से है (देखें KJV): भविष्य की आवश्यकताओं का अनुमान लगाते हुए जमा करना। परन्तु इस मामले में अपश्चात्तापी लोग क्रोध के दिन के लिए *और* क्रोध जमा कर रहे हैं। भविष्य की तैयारी के सम्बन्ध में एक अभिव्यक्ति है: ''बारिश के दिन के लिए बचाना।'' क्रोध के दिन के लिए क्रोध जमा करना बारिश के दिन के लिए पानी के बड़े मटके जमा करने की तरह ही है। अपश्चात्तापी व्यक्ति जो कुछ कर रहा था, वह विनाशकारी ही नहीं, बल्कि बेतुका भी था।

परमेश्वर हर किसी का न्याय करेगा (आयत 3)

इस प्रकार रोमियों 2 की पहली पांच आयतें यह घोषणा करती हैं कि परमेश्वर न्याय करने वालों का (आयतें 1-3) और पश्चात्तापी (आयतें 4, 5) लोगों का न्याय करेगा। अगली आयतों में पौलुस ने घोषणा की कि प्रभु ''हर एक'' (आयत से), ''हर एक मनुष्य'' (आयत 9), ''हर एक'' (आयत 10), यहूदी और अन्यजाति सब का (आयतें 10, 11) न्याय करेगा। जब यीशु न्याय के सिंहासन पर बैठेगा, ''*सब* जातियां उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी'' (मत्ती 25:32)। ''छोटे बड़े सब'' सिंहासन के सामने खड़े होंगे और *सब* का ''उनके कामों के अनुसार ... न्याय'' होगा (प्रकाशितवाक्य 20:12)।

रोमियों 2:3 का प्रश्न आज भी प्रासंगिक है, ''कि ... क्या यह समझता है कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा?'' कई बार *मानवीय* न्याय में दोषी बच जाते हैं। हो सकता है कि उनके अपराधों का पता न चले या वे पकड़े न जाएं। यदि पकड़े भी जाएं तो वे महंगे वकील खरीद सकते हैं, जो तकनीक से उन्हें बचा सकें। यदि उन्हें दण्ड मिलता है तो वे जेल से बच सकते हैं। *ईश्वरीय* न्याय में इनमें से कोई बात लागू नहीं होती। कोई पाप छिपा न रहेगा (इब्रानियों 4:13) और कोई पापी न्याय के दिन से भाग नहीं सकेगा (प्रकाशितवाक्य 20:12)। परमेश्वर के वचन में कोई ''सुराख'' नहीं है (देखें भजन संहिता 18:30) और नरक से जो दण्ड पाए हुओं की सनातन जेल है, कोई बचाव नहीं (मरकुस 9:44; देखें लूका 16:26)।

कई बार लगता है कि जीवन में बहुत निश्चितताएं नहीं है, परन्तु यह निश्चित है कि न्याय का दिन *होगा* और जो भी कभी यहां जीवित रहा हो, वहां पर होगा। मैं वहां होऊंगा, आप वहां होंगे। न्याय होना पक्का है!

न्याय निर्विवाद होगा! (2:6-11)

परमेश्वर हमारा न्याय हमारे कामों के अनुसार करेगा (आयतें 6-8)

यह हमें अपने वचन पाठ के सबसे विवादास्पद भाग अर्थात पौलुस के उस दावे तक ले आता है कि न्याय हमारे कामों के अनुसार होगा। उसने कहा:

> [परमेश्वर] हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, बरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा (आयतें 6-8)।

आयतों की समीक्षा। पहली नज़र में ये आयतें स्पष्ट प्रतीत होती हैं। इनमें ऐसा कुछ नहीं सिखाया गया, जो बाइबल की दूसरी जगहों में न सिखाया गया हो (उदाहरण के लिए देखें यिर्मयाह 3219:19; होशे 12:2), चाहे वह पौलुस के द्वारा ही हो (देखें 2 कुरिन्थियों 5:10)। इसके आस पास के विवाद की बात करने से पहले आइए इन आयतों की समीक्षा कर लेते हैं।

''परमेश्वर के सच्चे न्याय'' (आयत 5) की बात करने के बाद पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ''हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा'' (आयत 6)। ''कामों'' शब्द का अनुवाद

êÌí¶ôòð से किया गया है, जो ''काम'' के लिए अर्थात किसी व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले किसी काम के सामान्य शब्द का बहुवचन रूप है। पौलुस पुराने नियम से सम्भवतया भजन संहिता 62:12[11] से उद्धृत कर रहा था।

हमारा न्याय हमारे कामों के अनुसार होगा। यह विषय बाइबल के दोनों नियमों में मिलता है। यीशु ने नये नियम में कहा कि जब वापस आएगा तो वह, ''हर एक को उस के कामों के अनुसार प्रतिफल देगा'' (मत्ती 16:27)। पौलुस ने लिखा कि ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किया हों, पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)। प्रकाशितवाक्य 20 वाले न्याय के दृश्य में ''जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उन कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया'' (आयत 12)। किसी ने कहा है, ''काम तो बीज की तरह होते हैं: आप उन्हें अभी बोते हैं पर उनका फल बाद में मिलता है।''

7 और 8 आयतों में पौलुस ने 2:6 के बुनियादी नियम को विस्तार दिया। उसने परमेश्वर के उन लोगों का न्याय करने की बात की, जिनके काम अच्छे हैं: ''जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें [परमेश्वर[12]] अनन्त जीवन देगा'' (रोमियों 2:7)। जिस प्रकार के लोगों का यहां उल्लेख किया गया है, वे तीन बातों की खोज में हैं: ''महिमा [*doxa*] और आदर [*time*] और अमरता [*aphtharsia*]'' पौलुस ने ऐसे लोगों को *आत्म-खोजियों* (आयत 8; देखें NIV) से अलग बताया, इसलिए उसका अर्थ सम्भवतया वे लोग नहीं था जो *व्यक्तिगत* महिमा और आदर की खोज में थे, बल्कि *परमेश्वर* के साथ विशेष सम्बन्ध की खोज वालों के लिए था।[13] वे परमेश्वर की शान (''महिमा'') को देखना चाहते थे; वे परमेश्वर की स्वीकृति (''आदर'') देखना चाहते थे; वे परमेश्वर की उपस्थिति (''अमरता''; देखें यूहन्ना 17:3) देखना चाहते थे। उनमें उसका बोध है, जो सचमुच महत्वपूर्ण है।

ऐसे लोग केवल भला *करते* ही नहीं बल्कि भला करते हुए वे *दृढ़ प्रतिज्ञा* भी होते हैं। अनुवादित शब्द ''स्थिर'' मिश्रित शब्द (*hupomone*) से लिया गया है जो ''रहना'' (*meno*) के लिए शब्द के साथ ''अधीन'' (*hupo*) के लिए उपसर्ग को मिलाता है।[14] यह दबाव के बीच में भी ''स्थिर बने'' रहने की योग्यता को दर्शाता है। इसका ''इस्तेमाल उस सिपाही के लिए जो भीषण युद्ध में ... उन प्रहारों से जो उस पर पड़ते हैं, डगमगाता नहीं बल्कि अन्त तक लड़ता रहता है'' किया जा सकता है।[15]

फिर पौलुस ने उनकी बात की जिनके काम बुरे हैं: ''पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, बरन अधर्म को मानते हैं, उस पर [परमेश्वर का] क्रोध और कोप पड़ेगा'' (आयत 8)। इन विद्रोही लोगों को पहले ''विवादी'' कहा गया है (आयत 8क)। इस शब्द का अनुवाद *eritheia* से किया गया है, जो वह शब्द है जिसे उनके लिए इस्तेमाल किया जाता है, ''जो लाभ के लिए अपने आपको कमीने बना देते हैं। ... विचार 'नीच स्वार्थ' अर्थात 'नीचता' का है जो अपनी नज़र ऊंची बातों पर नहीं लगा सकता।''[16] अरस्तु ने इस शब्द का इस्तेमाल ''जनता की भलाई के बजाय निजी लाभ लेने के लिए पद की इच्छा रखने वाले राजनेताओं की निंदा करने के लिए'' किया।[17]

यह स्वार्थी लोग ''सत्य को नहीं मानते [जो परमेश्वर के वचन में मिलता है], बरन अधर्म

को मानते हैं'' (आयत 8ख)। अपने अनुवाद में फिलिप्प ने उन्हें ''जो जीवन की परमेश्वर की योजना का विरोध करते और उसके नियमों को मानने से इनकार करते हैं'' कहा है यानी वे लोग जो ''बुराई के सेवक'' हैं।

उनका ''प्रतिफल'' ''क्रोध और कोप'' ही होगा (आयत 8ग)। अनुवादित शब्द ''क्रोध'' (*orge*) और ''कोप'' (*thumos*) दोनों ''गुस्सा'' के लिए यूनानी शब्द हैं। दोनों शब्द अलग अलग तरह के गुस्से को दर्शाते हैं,[18] यहां वे अन्त के दिन अपश्चात्तापी लोगों पर परमेश्वर के ''ज्वलंत क्रोध'' (NIrV) तस्वीर को बढ़ाने के लिए जोड़े गए हैं।[19] ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)!

2:7, 8 में पौलुस ने दोनों तरह के लोगों में अन्तर किया। उनके लक्ष्य अलग हैं: एक तो परमेश्वर का क्रोधी है जबकि दूसरा आत्मिक खोजी। उनके काम अलग हैं: एक तो भलाई करता है जबकि दूसरा बुराई करता है। इसलिए उनकी मंजिलें अलग होंगी: एक अनन्त जीवन पाएगा जबकि दूसरे को परमेश्वर का ''क्रोध और कोप मिलेगा।'' ध्यान दें कि केवल *दो* सम्भावनाएं हैं; बीच का कोई रास्ता नहीं। आप या तो एक गुट में हैं या दूसरे।

समस्या पर ज़ोर दिया गया। 6 से 8 आयतों को उन्हें अपने ऊपर लें तो यही लगता है कि वे पूरी बाइबल की इससे मिलती आयतों में सिखाई बातें ही दोहराती हैं। तौभी पौलुस की बात यहां विवादास्पद हैं। यह उनके लिए जो यह सिखाते हैं कि ''उद्धार केवल विश्वास का होता है।'' विशेष ध्यान देने वाली है और हमारे उद्धार का कामों से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके अलावा ये वचन टीकाकारों को परेशान करते हैं, जो अच्छी तरह जानते हैं। यहां तक कि दुखी होकर जानते हैं कि हमारा उद्धार कामों (*erga*) से नहीं, बल्कि विश्वास के आधार पर अनुग्रह से होता है (उदाहरण के लिए देखें 4:1-8; 11:6)।

हम में से अधिकतर लोग जो बाइबल का प्रचार करते, सिखाते और लिखते हैं, हर कष्ट असंगत बात को मिलाने के लिए विवश महसूस करते हैं। स्पष्टतया परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों के लिए यह बड़ी बातें नहीं थीं। उदाहरण के लिए 8 से 11 अध्यायों में पौलुस ने पहले से ठहराए जाना तथा परमेश्वर की सम्प्रभु इच्छा की अन्य अभिव्यक्तियों के बारे में लिखा। इसके साथ ही रोमियों के नाम यह पत्र स्पष्ट संकेत देता है कि प्रेरित लोग मनुष्यजाति की स्वतन्त्र इच्छा में विश्वास रखते थे। जब मैं और आप अध्याय 8 पर पहुंचेंगे तो समझने की कोशिश करेंगे कि परमेश्वर हमारी स्वतन्त्र इच्छा में हस्तक्षेप किए बिना कैसे भविष्य को पहले से ठहरा सकता और जान सकता है। स्पष्टतया पौलुस को इन दोनों अवधारणाओं को आपस में मिलाने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई। उसने परमेश्वर की सम्प्रभुता पर और मनुष्य की स्तवन्त्र इच्छा पर सच्चाई बताई और इससे अधिक इसके बारे में कुछ नहीं कहा।

पवित्र शास्त्र में ''हर बात को मिलाने'' से हमारे प्रयासों से मुझे कई बार एक कठिन पहेली को सुलझाने की कोशिश करते एक बच्चे का स्मरण आता है। यदि वह सब टुकड़ों को इकट्ठे नहीं कर पाता तो वह परेशान हो जाता है। यदि यह आराम से अपनी जगह पर नहीं जाता तो वह ''इसे लगाने'' की कोशिश में उस टुकड़े पर दबाव भी डाल सकता है।

सांकेतिक अर्थ में कहें तो यही बात 2:6-8 में कई बार न्याय पर पौलुस की शिक्षा पर लागू होती है: इन आयतों को रोमियों की पुस्तक की बाद की शिक्षा से मिलाने को उत्सुक कुछ लेखक

इन शक्तिशाली आयतों को थोड़ा रूखे ढंग से नकार देते हैं। कई कहते हैं कि ये आयतें केवल दोष लगाने के लिए हैं, परन्तु 7 और 10 आयतें निश्चय ही उद्धार की बात करती हुई लगती हैं। अन्य यह ज़ोर देते हैं कि ''काम'' वे हैं, जो विश्वासी मसीही लोगों द्वारा किए गए हैं और इसे उसी पर छोड़ देते हैं, परन्तु वह निष्कर्ष इस प्रश्न को बिना हल किए छोड़ देता है कि हमारा ''न्याय हमारे कामों के द्वारा'' *कैसे* (किस आधार पर) होता है। कई ऐसे भी हैं, जो यह दावा करते हैं कि कामों को उद्धार से जोड़ना केवल कल्पना है क्योंकि किसी के काम सिद्ध नहीं हैं। किसी एक के साथ कई यह कहते हैं कि पौलुस का उद्देश्य धर्मी ठहराए जाने के एक प्रबन्ध को दिखा था क्योंकि कोई ऐसा नहीं है, जो परमेश्वर की व्यवस्था को पूरी तरह से मान सके।

मैं समझता हूं कि इनमें से अधिकतर लोग क्या कह रहे हैं। और इस बात को महसूस करता हूं कि अपना उद्धार कमाने के लिए कोई भी इतने भले काम नहीं कर सकता, परन्तु मुझे आश्चर्य है कि यदि पौलुस के मन में ये लक्ष्य थे जैसा कि उसने न्याय के दिन की इतनी स्पष्ट तस्वीर बनाई जिसमें इसके प्रतिफल और दण्ड भी दिए गए हैं। जब पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को बताया कि ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10), क्या उसका उद्देश्य छुटकारे के असम्भव बंद का विवरण देना था। जब मसीह ने अपने चेलों को बताया कि वह ''वह हर एक को उस के कामों के अनुसार प्रतिफल देगा'' (मत्ती 16:27), तो क्या उसका अर्थ केवल दण्ड देना था? 2:6 में उद्धृत किए गए वचन में दाऊद ने यह मानते हुए कि जब प्रभु किसी को ''उसके काम के अनुसार'' बदला देता है तो *अच्छी* चीजें हो सकती हैं, परमेश्वर की ''दयालुता'' की बात की (भजन संहिता 62:12)।

यदि 4 से 10 आयतें बाइबल में कहीं और होतीं, तो हमें भला करने के लिए ज़बर्दस्ती प्रोत्साहन मिलता न कि बुरा करने के लिए। क्या यह हो सकता है कि रोमियों 2 में पौलुस की यह मंशा हो? उसने अभी-अभी यहूदियों पर वही पाप करने का आरोप लगाया था जिसके लिए वे अन्यजातियों को कोसते थे। अपने दोष के बावजूद वे अपश्चात्तापी रहे एक अर्थ में क्या उसके लिए अधिकतर यह कहना तर्कहीन होता कि ''यदि तुम मन नहीं फिराते और जीवन नहीं सुधारते तो तुम्हें परमेश्वर के सच्चे न्याय का सामना करना पड़ेगा! यदि तुम अपने मनों और जीवनों को बदल लेते हो तो अच्छी चीजें मिलेंगी और यदि तुम प्रभु और उसकी इच्छा के विरुद्ध विद्रोह जारी रखते हो तो तुम्हारे लिए भयंकर चीज़ें रखी हुई हैं?''

सम्भावनाएं खोजी गईं। हम में से कइयों को अपने विचारों को मिलने वाली बेचैनी इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच तनाव है। ऐसा है तो नीचे दी गई टिप्पणियां बिल्कुल सही हैं।

(1) शायद सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैं कह सकता हूं वह यह है कि चाहे जहां तक ''भला करने'' की बात है उसमें दो अलग-अलग तरह के ''काम'' हैं। एक वह जो अपने आप में धार्मिकता के काम हैं (देखें लूका 18:9) और बाहरी काम हैं जिनके ऊपर भीतरी विनाश का मुखौटा है (देखें मत्ती 23:28)। स्पष्टतया परमेश्वर ऐसे कामों का पक्ष नहीं लेता। दूसरी ओर ऐसे काम हैं जो ''विश्वास के आज्ञापालन'' से होते हैं (रोमियों 1:5; 16:26)। यह उस विश्वास की अभिव्यक्तियां हैं, जो यीशु में हमारा है। यदि पौलुस के कहने का अर्थ अनन्त जीवन पाने के लिए भलाई करने वाले होना है (2:7) तो उसके मन में विश्वास के काम थे। लियोन मौरिस ने लिखा

है कि काम (कर्म) ''व्यक्ति के भीतर की बाहरी अभिव्यक्ति है, विश्वास में विश्वास की अभिव्यक्ति है। ...''[20]

(2) पौलुस परमेश्वर के खोजियों (आयत 7) को स्वार्थियों (आयत 8) से अलग कर रहा था। उसने कहा कि *परमेश्वर* के खोजियों के भले काम ही हैं, जिनका प्रतिफल मिलेगा (आयत 7)। ऐसे लोग अपने आप में नहीं, प्रभु पर भरोसा रखते हैं।

(3) इसके अलावा पौलुस ने *आज्ञा मानने वाले* सच्चाई और *आज्ञा मानने वाली* अधार्मिकता में अन्तर किया (आयत 8)। जैसा कि हमने ज़ोर दिया है रोमियों की पुस्तक में *विश्वास* और *आज्ञापालन* की धारणाओं में गहरा सम्बन्ध है। जे. डी. थॉमस ने लिखा है:

> ''मानते'' शब्द जैसा कि आयत 8 में आता है ... यह ज़ोर देता है कि उद्धार परमेश्वर की स्पष्ट इच्छा को माने बिना नहीं हो सकता। परन्तु उसमें कुछ आज्ञाओं को मानने से कहीं अधिक शामिल है। इसका अर्थ ''दिल से मानना'' है जिसमें पूर्ण समर्पण शामिल है।[21]

''पूर्ण समर्पण'' विश्वास से ही आता है

(4) 1 से 16 आयतें ध्यान से पढ़ें और आप पाएंगे कि पौलुस केवल ''भले काम करने'' पर ही ध्यान नहीं लगा रहा था; वह उन कामों के पीछे की प्रेरणा पर उतना ही ध्यान लगाता था। आयत 5 में उसने दिल की बात की। आयत 16 में उसने लोगों की ''गुप्त बातों'' की बात की, जिनमें उनके विचार और उद्देश्य शामिल हैं (देखें AB)। जॉन मैकार्थर ने कहा है, ''किसी व्यक्ति के कार्य उसके *स्वभाव* की अचूक विषयसूची बनाते हैं।''[22] (देखें मत्ती 7:16, 20.)

(5) अन्त में अपने आपको याद दिलाना कि बाइबल की किसी आयत को कभी अलग नहीं किया जाना चाहिए, हमेशा सही रहता है। रोमियों तथा कई और दूसरी आयतों के प्रकाश में हम मान सकते हैं कि 8 और 9 आयतों वाले बुराई करने वाले वे लोग हैं जो प्रभु में भरोसा नहीं रखते या अपने जीवन उसे नहीं देते। न्याय के समय वे परमेश्वर के सामने अपने पापों का हिसाब ज्यों का त्यों देखेंगे। हम यह भी मान सकते हैं कि 7 और 10 आयतों वाले भलाई करने वालों ने प्रभु की आज्ञाओं को *माना है* और उसके अनुग्रह को ग्रहण किया है। पुराने नियम में हो या नये नियम में, उनके पाप यीशु के लहू से धोए गए हैं (देखें इब्रानियों 9:15)। इस कारण वे न्याय का सामना बिना भय के करते हैं।

जे. डी. थॉमस ने रोमियों 2:6 पर विचार करते हुए केवल इतना कहा, ''यह ध्यान देना ही काफी है ... कि मसीही व्यक्ति का अंतिम प्रतिफल *किसी न किसी तरह* और *किसी न किसी स्तर तक* उसके कामों पर टिका होगा।''[23] एक और ने कहा है, ''हमारा उद्धार अपने कामों *से* नहीं होता, पर न ही हमारा उद्धार उनके *बिना* हो सकता है, क्योंकि हमारे काम हमारे विश्वास को व्यक्त करते हैं [देखें याकूब 2:18, 20]।'' इन टिप्पणियों के साथ अभी के लिए हम मामले को ''अपने कामों के अनुसार न्याय'' किए जाने पर छोड़ देते हैं।

कोई छूट नहीं होगी (आयतें 9-11)

9 और 10 आयतों में पौलुस ने एक महत्वपूर्ण जोड़ के साथ 7 और 8 आयतों के विचारों को

(विपरीत दिशा में) दोहराया। आयत 9 में उसने उन लोगों के भविष्य की बात की जो बुराई करते हैं। ''क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है, आएगा'' (आयत 9) आयत 8 कहती है कि परमेश्वर का गुस्सा (''क्रोध'' और ''कोप'') बुराई करने वाले की राह देखता है। अब आयत 9 कहती है कि वह ''क्लेश और संकट'' पाएगा।

अनुवादित शब्द ''क्लेश'' (*thlipsis*) का मूल अर्थ ''दबाव'' अर्थात ऐसा दबाव है, जो ''आत्मा'' पर बोझ डालता है।[24] ''संकट'' का अनुवाद एक मिश्रित शब्द (*stenochoria*) से किया गया है जिसका अर्थ ''तंग जगह'' (*stenos* [''तंग''] के साथ *chora* [''एक जगह''] है। इसका सम्बन्ध ऐसे ढंग से मिलने के कारण होने वाले संकट से है।[25] नरक में दुष्ट लोग कुख्यात चट्टान और कठोर स्थान के बीच में होंगे।

क्या कोई छूट होगी? नहीं। पौलुस ने कहा कि दण्ड ''*हर एक* मनुष्य पर जो बुरा करता है आएगा।'' इसके प्रमाण के रूप में पौलुस ने शिक्षा को उस दिशा में मोड़ा जिसकी कोई यहूदी उम्मीद नहीं कर सकता था: ''पहले यहूदी और फिर यूनानी पर'' (आयत 9)। यहूदियों को विशेष अवसर दिए गए थे (देखें आयतें 17-20) परन्तु विशेष अवसरों के साथ विशेष ज़िम्मेदारियां भी थीं। ''परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच'' नहीं पाएंगे (आयत 3); वे न्याय के दिन परमेश्वर के सिंहासन के सामने ''कतार में सबसे आगे'' होंगे!

फिर पौलुस उनकी ओर वापस आ गया जो भलाई करते हैं: ''परन्तु महिमा, आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है'' (आयत 10क)। इस आयत में महिमा, आदर और ''कल्याण'' (*eirene*) परमेश्वर और मुनष्य के साथ सुलह अर्थात इस अन्तिम और सम्पूर्ण सुलह की बात है, जो केवल स्वर्ग में ही मिलेगी। प्रेरित ने आगे कहा, ''पहले यहूदी को फिर यूनानी को'' (आयत 10ख)। ''क्योंकि'' उसने कहा ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' (आयत 11)।

जॉन. आर. डब्ल्यू स्टॉट के पास एक दिलचस्प थ्योरी थी कि वचन क्यों कहता है कि हमारा न्याय हमारे कामों के अनुसार होगा:

> ... न्याय का दिन एक सार्वजनिक अवसर होगा। ...
>
> ऐसा सार्वजनिक अवसर जिस पर सार्वजनिक आदेश दिया जाएगा और सार्वजनिक दण्ड होगा, उसमें उनके समर्थन के लिए सार्वजनिक और सत्यापित प्रमाण की आवश्यकता होगी। और एकमात्र सार्वजनिक प्रमाण हमारे काम होंगे, जो हमने किए हैं और उन्हें करते देखा गया है।[26]

स्टॉट द्वारा दिखाए गए दृष्य से हम सहमत हों या न पर हम इस पर सहमत हो सकते हैं कि हमारे कामों के द्वारा हमारा न्याय होने के लिए न्याय के आधार से बढ़िया और कुछ नहीं हो सकता। मेरा न्याय आपके कामों के द्वारा नहीं होगा; आपका न्याय मेरे कामों से नहीं होगा; हर किसी का न्याय उसी के अनुसार होगा जो *उस ने* किया है। प्रमाण निर्विवाद होगा; और निर्णय निष्पक्ष होगा।

न्याय बिना पक्षपात के होगा! (2:12-15)

पिछला भाग आयत 11 के साथ समाप्त हुआ था: ''क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।'' ''पक्षपात'' का अनुवाद एक मिश्रित शब्द (*prosopolempsia*) से किया गया है जो ''प्राप्त करना'' (*lambano*) के लिए शब्द के साथ ''चेहरा'' (*prosopon*) के लिए शब्द को मिलाता है। विचार ''किसी के मुंह पर प्राप्त करना'' अर्थात बाहरी दिखावट के आधार पर दूसरे से व्यवहार करना है। मानवीय जीवों के रूप में हम ''बाहरी रूप के आधार पर'' दूसरों को स्वीकार करते या नकारते हैं। इसके अलावा हम किसी के साथ कठोरता से और दूसरों के साथ नम्रता से व्यवहार करके अपने न्याय में आमतौर पर पक्षपाती होते हैं। परन्तु परमेश्वर पक्षपात रहित है (देखें व्यवस्थाविवरण 10:17; 2 इतिहास 19:7; प्रेरितों 10:34, 35)। (रोमियों 11 के अपने बाद के अध्ययन के लिए इस विचार को उठा लें। कइयों का मानना है कि 11:26 यह सिखाता है कि एक दिन परमेश्वर सब यहूदियों को बचा लेगा। यदि ऐसा होता तो परमेश्वर सब अन्यजातियों को भी बचा लेगा क्योंकि वह सब के साथ एक सा व्यवहार करता है![27])

अगली आयतों में पौलुस ने यह बताते हुए कि परमेश्वर ने यहूदियों और अन्यजातियों के साथ कैसे व्यवहार किया, उसकी निष्पक्षता को दिखाया। प्रेरित के मन में विशेषकर मसीह के आने की उत्सुकता तथा यहूदियों और अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के व्यवहारों की बात थी।

अन्यजातियों और यहूदियों दोनों का न्याय होगा (आयतें 12, 13)

आयत 12 आरम्भ होती है, ''इसलिए कि जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे'' (आयत 12)। ''व्यवस्था'' (*nomos*) शब्द का पौलुस का यह पहला इस्तेमाल है, जिसे उसके पत्र में प्रमुख स्थान दिया गया है। *नोमोस* के कई अर्थ हो सकते हैं,[28] क्योंकि यहां इसका अर्थ मूसा की व्यवस्था के लिए है। ''जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया'' (आयत 12)। उन अन्यजातियों के लिए कहा गया है जिन्हें ''परमेश्वर की निश्चित व्यवस्था'' (NLT) नहीं मिली थी। पौलुस ने कहा कि ''वे बिना व्यवस्था के नष्ट भी होंगे'' (आयत 12)।

यहूदियों के विषय में ''जिनके पास मूसा की व्यवस्था थी,'' पौलुस ने कहा, ''और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया [अर्थात यहूदियों], उनका दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा'' (आयत 12)। ''क्योंकि'' उसने कहा कि ''परमेश्वर के यहां व्यवस्था के *सुनने वाले* धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर *चलने वाले* धर्मी ठहराए जाएंगे'' (आयत 13)। अधिकतर लोगों ने प्रत्येक सब्त के दिन आराधनालय में पढ़े जाने के द्वारा व्यवस्था को सीखा था (देखें प्रेरितों 13:15)। परन्तु पौलुस ने ज़ोर दिया कि व्यवस्था का *सुनना* ही काफ़ी नहीं था; इसे *मानना* भी आवश्यक था (याकूब 1:22-25 से तुलना करें)।

सबका न्याय निष्पक्ष रूप से होगा (आयतें 14, 15)

कोई आपत्ति कर सकता है, ''परमेश्वर के लिए यहूदियों का न्याय करना सही है, जिनके पास निश्चय व्यवस्था थी; परन्तु अन्यजातियों का न्याय करना उचित नहीं है, जिनके पास व्यवस्था नहीं थी।'' जैसा कि ''अन्याजतियों, विवेक, और मिशन कार्य'' पाठ में देखा गया था, पौलुस का

उत्तर था कि अन्यजातियों के पास व्यवस्था *थी*। उनके पास पत्थर की पट्टिकाओं पर लिखी व्यवस्था नहीं थी, परन्तु उनके पास उनके मनों पर लिखी व्यवस्था थी (आयतें 14, 15[29])।

पौलुस का उद्देश्य यह दिखाना था कि यहूदी हो या अन्यजाति किसी का भी जीवन उस मापदण्ड के अनुसार नहीं था जो उसके पास था। इसलिए सब को परमेश्वर के धर्म की आवश्यकता थी। परन्तु अभी के लिए मैं इस तथ्य को रेखांकित करना चाहता हूं कि परमेश्वर बिल्कुल निष्पक्ष था (और है)। ''परमेश्वर सब के साथ एक सा व्यवहार करता है'' (2:11; NIrV)।

न्याय होना निश्चित (2:16)

आयत 16 न्याय पर पौलुस के विचारों को संक्षिप्त करती है। कइयों का विचार है कि यह आयत, आयत 12 के साथ पढ़ी जानी चाहिए, जबकि दूसरों का मत है कि इसका आयत 13 के बाद आना स्वाभाविक है।[30] NASB में आयत 16 आयत 14 में आरम्भ किए वाक्य को पूरा करती है, परन्तु हम इसे देखते हैं तो यह आयत चर्चा के समापन के लिए उपयुक्त है। पौलुस ने उस दिन की बात की ''जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार[31] यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा'' (आयत 16)।

अचूक मूल्यांकन करने वाला

आयत 16 छोटी है पर इसमें कइयों के लिए आश्चर्य है। उदाहरण के लिए कइयों को यह जानकर हैरानी होगी कि न्याय *कौन* करेगा: ''परमेश्वर ... यीशु मसीह के द्वारा ... न्याय करेगा।''

अपनी पूरी निजी सेवकाई में यीशु ने घोषणा की कि परमेश्वर ने सारा न्याय उसी को सौंप दिया है (यूहन्ना 5:22; देखें मत्ती 7:21-23; 25:31-33)। पतरस ने कुरनेलियुस को बताया कि यीशु को ''परमेश्वर ने जीवितों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया'' (प्रेरितों 10:42)। मार्क पहाड़ी पर अपने उपदेश में पौलुस ने कहा कि ''एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (प्रेरितों 17:31)।

बहुत से लोग जब यीशु के बारे में सोचते हैं तो उसे एक अद्‌भुत व्यक्ति और ज़बर्दस्त शिक्षक और हमारे उद्धारकर्त्ता के रूप में सोचते हैं, परन्तु हमारा न्याय करने वाले के रूप में नहीं। ''कोई भी जिसके पास मसीह की ऐसी तस्वीर है, जो उसे पृथ्वी के न्याय के रूप में नहीं दिखाती वह उद्धारकर्त्ता की सच्ची पहचान की गंभीर भूल में परिश्रम कर रहा है।''[32]

दोषी ठहराने वाला प्रमाण

कई लोग उस दिन प्रकट की जाने वाली *बातों* से भी चकित होंगे: ''परमेश्वर *मनुष्यों की गुप्त बातों* का न्याय करेगा।'' अनुवादित शब्द ''गुप्त बातों'' (*krupta*), जो (*kruptos*) का बहुवचन है का अर्थ ''गुट'' (या छिपी हुई) बातें हैं।[33] यह किसी भी बात के लिए जो दूसरों को पता न हो, जैसे हमारे विचार (NCV; NIrV) और मंशाओं (LB), अनकही बातों और गुप्त में किए गए कामों (NLT; फिलिप्स) को कहा गया है। यीशु ने कहा कि ''कुछ ढका नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा'' (लूका 12:2; सभोपदेशक 12:14)।

हर किसी के जीवन में ऐसी बातें हैं जो उसी को लगता है कि किसी को मालूम नहीं। उदाहरण के लिए,[34] कोई आदमी गाड़ी की स्पीड बढ़ा लेता है या लाल बत्ती को पार कर लेता है। वह फुर्ती से इधर-उधर देखता है, परन्तु कोई पुलिस वाला दिखाई नहीं देता। वह राहत की सांस लेता है और सोचता है, ''मुझे किसी ने नहीं देखा!'' इसमें सुधार की आवश्यकता है क्योंकि किसी *मनुष्य* ने चाहे उसे नहीं देखा, पर *परमेश्वर* ने देखा था। प्रभु सब कुछ जानता है और सब कुछ देखता है (देखें 1 शमूएल 16:7; भजन संहिता 139:1-4; यिर्मयाह 17:10; लूका 16:15; यूहन्ना 2:25; इब्रानियों 4:12, 13) और उस अन्तिम दिन में सब कुछ प्रकट कर दिया जाएगा। यह आपके पड़ोसियों पर, आपके मित्रों पर, आपके परिवार पर प्रकट किया जाएगा। हर पाप जो यीशु के लहू से ढका नहीं है (मत्ती 26:28; 1 यूहन्ना 1:7) नंगा किया जाएगा! कितना परेशान करने वाला है! कितना विनाशकारी है!

निश्चित घटना

रोमियों 2:16 में और आश्चर्य भी हैं जैसे यह तथ्य कि न्याय की कहानी सुसमाचार का अभिन्न अंग है: ''परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार,[35] ... मनुष्यों का न्याय करेगा।'' ''शुभ समाचार'' की महिमा को पूरी तरह समझने के लिए हमें न्याय की अंधकार भरी पृष्ठभूमि के विपरीत इसे देखना आवश्यक है।

परन्तु बहुतों के लिए सबसे बड़ा आश्चर्य यह होगा कि *न्याय का दिन है:* यानी ''परमेश्वर मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय *करेगा*।'' आयत 16 हमें उसी सच्चाई में वापस ले आती है, जिससे हमने आरम्भ किया था। न्याय से कोई नहीं बचेगा।

कइयों को न्याय की सम्भावना की बात पर विचार करना अच्छा नहीं लगता। कइयों को यह धुंधली सी आशा है कि मृत्यु के बाद जीवन में जो भी मिले, ''सब कुछ ठीक हो जाएगा।'' कई तो यह मानते हैं कि न्याय का दिन हो ही नहीं सकता ''क्योंकि परमेश्वर कभी किसी को नरक में नहीं भेजेगा।'' फ्रांसीसी नास्तिक वोल्टेयर को एक बार पूछा गया था कि उसे एक दिन परमेश्वर का सामना करने की चिंता क्यों नहीं है। उसने कहा, ''परमेश्वर क्षमा कर देगा।'' जब उससे पूछा गया कि वह इतना आश्वस्त कैसे हो सकता है, तो उसका उत्तर था, ''क्योंकि यही उसका काम है।''[37]

प्रभु के सामने खड़े होने और ''कुछ को'' स्वर्ग में परन्तु ''बहुतों को'' नरक में भेजने पर कितने लोग चकित होंगे! (देखें मत्ती 7:13, 14; 25:31-34, 44, 46.)

सारांश

अपने पाठ में हमने देखा है कि न्याय का दिन होना पक्का है, परमेश्वर के निर्णय निर्विवाद हैं, प्रभु पक्षपात नहीं करेगा और न्याय का होना पक्का है। फिर मैं पूछता हूं, ''क्या आप उस दिन के लिए *तैयार* हैं?'' यदि आप इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करते हैं तो आप समझ सकते हैं कि आपका जीवन वैसा नहीं है, जैसा होना चाहिए, यानी आपको परमेश्वर के अनुग्रह और दया की अत्याधिक आवश्यकता है। यदि आपको यह अहसास हो जाता है तो प्रभु की स्नेह भरी बाहों में भागने में एक दिन भी और प्रतीक्षा न करें।

एक बार सिकन्दर महान ने जब किसी नगर को घेरा हुआ था, तो उसने एक बहुत बड़ी

मशाल लगा दी थी। घिरे हुए लोगों को संकेत देने के लिए उसने उस मशाल को दिन-रात जलने दिया। उस नगर के लोगों को उसने संदेश भेजा कि जब तक यह मशाल जलती रहे तब तक उनके पास समर्पण करके अपने आपको बचाने का समय है। परन्तु मशाल के बुझ जाने पर नगर और इसके सब लोगों को बिना दया के खत्म कर दिया जाएगा।[38] आज परमेश्वर की सहनशीलता और धीरज की ''मशाल'' चमक रही है, जो आपको उसके पास आने के लिए समय दे रही है। एक दिन, हो सकता है बहुत जल्द वह ज्योति बुझ जाए और फिर आपके पास समय न हो। परमेश्वर की भलाई आज ही आपको मन फिराव तक ले आए!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल सरमन के रूप में करते हैं तो आपको उन आयतों को शामिल करना चाहिए कि जो लोग अभी मसीही नहीं हैं वे ''परमेश्वर की स्नेही बाहों में भाग'' कैसे सकते हैं (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:36-38) और भटके हुए मसीही ऐसा ही कर सकते हैं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16)।

बहुत से लोग जब हमारे वचन पाठ पर लिखते, सिखाते या प्रचार करते हैं, तो वे ''न्याय के नियम'' जैसे शीर्षक का इस्तेमाल करते हैं। उनकी सूचियों में तीन से दस तक नियम होते हैं। मैंने अन्य नियमों को उपशीर्षकों और सामान्य चर्चा में मिलाते हुए उन में से चार को मुख्य शीर्षकों के रूप में इस्तेमाल किया है।

आप रोमियों 2:16 का इस्तेमाल ''न्याय के दिन के आश्चर्य'' पर सेक्सुअल सरमन देने के लिए कर सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]विल एल. थॉम्पसन, ''देअर'स ए ग्रेट डे कमिंग,'' *सौंग्स ऑफ़ द चर्च,* संक. व संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशर्स, 1977). [2]इस पाठ के मुख्य शीर्षकों में से दो शीर्षक जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 82 से लिए गए थे। एक डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 63 से। [3]यदि आप के सुनने वाले इस वाक्यांश को समझते हैं तो आप कह सकते हैं, ''जब हमारे अपने पापों की बात आती है तो हम सब पर *काला धब्बा* है!'' [4]पौलुस ने ''हम जानते हैं'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया जब उसने माना कि सभी नहीं तो उसके अधिकतर पाठक उसकी बात से सहमत होंगे। [5]*दि इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट: द नेसले ग्रीक टैक्सट विद ए न्यू लिटरल इंग्लिश ट्रांसलेशन बाय एलफ्रेड मार्शल* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1958), 606. बाइबल सिखाती है कि हमारा न्याय प्रभु की प्रकट की गई सच्चाई के द्वारा होगा (देखें यूहन्ना 12:48)। परन्तु इस आयत में सच्चाई के अनुसार सम्भवतया उस तथ्य को कहा गया है कि परमेश्वर का न्याय सच्चा होगा। [6]ब्रिस्को, 58. [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 338. CJB में ''a mere man'' है; NIrV ''only a human being'' है। [8]अपने सुनने वालों की आवश्यकता के अनुसार उदाहरण जोड़ लें। [9]''*Skle rote s* ... मूलतया

कठोरता को दर्शाता है और यह वह शब्द है, जिससे हमें किसी डॉक्टरी भाषा का शब्द *sclerosis* मिला है। ऑर्टरियोस्क्लेरोसिस धमनियों के कठोर होने को कहा जाता है'' (जॉन मैकार्थर, *रोमन्स 1-8,* दि मैकार्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री [शिकागो: मूडी प्रैस, 1991], 120)। [10]''सच्चा न्याय'' का अनुवाद एक असामान्य शब्द (*dikaiokrisia*) से किया गया है, जो ''न्याय'' के लिए शब्द के साथ ''सच्चा'' के लिए यूनानी शब्द से मिलाता है।

[11]नीतिवचन 24:12 वही बात कहता है, पर प्रश्न रूप में। [12]7 और 8 दोनों आयतों में ''अक्षररूप'' है। इसका अर्थ है कि विचार को पूरा करने के लिए शब्द प्रदान करना आवश्यक है। इस मामले में आयत 6 में ''परमेश्वर देगा'' का विचार 7 और 8 आयत में दिया जाना आवश्यक है। [13]स्टॉट, 84. [14]वाइन, 462. [15]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 116. [16]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रैडरिच, ट्रांसलेशन, ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 256 में एफ. बुशल ''*eritheia.*'' [17]डग्लस जे. मू, *रोमन्स ,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 75. ऐसा व्यक्ति आमतौर पर अपने उद्देश्य को पाने के लिए किसी भी ढंग का इस्तेमाल कर लेता है इसलिए कई लैक्सिकन कहती हैं कि इस शब्द का अर्थ ''विवादग्रस्त'' (देखें KJV) या ''भेदकारी'' (देखें RSV) भी हो सकता है। [18]वाइन, 26. [19]मू, 75. [20]मौरिस, 116.

[21]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* द लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 19. [22]मैकार्थर, 128. [23]थॉमस, 19. [24]वाइन, 17. [25]वही, 27. [26]स्टॉट, 83-84. [27]बार्कले ने एक टिप्पणी की है, जिसे संसार के कई भागों में समझा जा सकता है: ''परमेश्वर के प्रबन्ध में सबसे पसंदीदा कौम की बात कहीं नहीं है'' (विलियम बार्कले, *दि लैटर टू रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975], 43)। [28]अध्याय 3 का अध्ययन करने के समय हम *nomos* (''व्यवस्था'') पर शब्द अध्ययन करेंगे। [29]अन्यजातियां, विवेक और मिशन कार्य में इन आयतों पर टिप्पणियां देखें। [30]KJV में 13 से 15 आयतें कोष्ठकों में हैं, जबकि NIV में 14 से 15 आयतें कोष्ठकों में है।

[31]''मेरे सुसमाचार'' वाक्यांश असामान्य है क्योंकि पौलुस के कहने का अभिप्राय था कि प्रभु द्वारा उसे सुसमाचार दिए जाने के बाद, एक अर्थ में उसने इसे अपना बना लिया था। [32]ब्रिस्को, 63-64. [33]*द इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* 608. [34]अपने सुनने वालों के लिए परिचित उदाहरणों का इस्तेमाल करें। [35]मेरे सुसमाचार का अर्थ हो सकता है कि हमारा न्याय सुसमाचार में पाई जाने वाली सच्चाई के अनुसार होगा (देखें यूहन्ना 12:48)। परन्तु इसका अर्थ सम्भवतया यह है कि सुसमाचार की कहानी में यह तथ्य शामिल है कि हमारा न्याय होगा। [36]एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक फ्रैंककोयस-मेरी अरऊट का प्रसिद्ध नाम था ''वोल्टेयर'' (1694-1778)। [37]मू, 80 से लिया गया। यह कथन जर्मन दार्शनिक हेनरिच हेनी (1797-1856) का भी माना जाता है। [38]डेविड एफ़. बर्गेस, संक. *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लुइस: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 53 से लिया गया।